M. A. (Final) Examination, 2001

HINDI

Paper VII

नाटक एवं रंगमंच

Time: 3 Hours] [Maximum Marks: 100

1. निम्नलिखित में से किन्ही **चार** की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। **40**

क- अकस्मात् जीवन कानन में, एक राका-रजनी की छाया में छिपकर वसंत घुस आता है। शरीर की सब क्यांरियां हरी-भरी हो जाती है। सौन्दर्य का कोकिल-कौन'? कहकर सबको टोकने लगता है, पुकारने लगता है । राजकुमारी! फिर उसी मेंप्रेम का मुकुल लग जाता है, आँसू भरी स्मृतियां मकरन्द सी उसमें छिपी रहती है।

ख- चन्द्रगुप्त! मै ब्रह्मण हूं। मेरा साम्राज्य करूणा का था, मेरा धर्म प्रेम का था। आनन्द-समुद्र शान्ति द्वीप का अधिवासी ब्राह्मण मै, चन्द्र-सूर्य नक्षत्र मेरे दीप थै, अनन्त आकाश वितान था, शस्य श्यामला कोमला विश्वम्भरा मेरी शय्याा थी। बौद्धिक विनोद कर्म था, संतोष धन था। उस अपनी ब्राह्मण की जन्मभूमि को छोडकर कहां आ गया।

ग- क्योंकि तुम्हारे लिए जीने का मतलब रहा है-कितना कुछ एक साथ ओढ़कर जीना। वह उतना कुछ कभी तुम्हें किसी एक जगह न मिल पाता, इसलिए जिस-किसी के साथ भी जिन्दगी शुरू करती, तुम हमेशा इतनी ही खाली, इतनी ही बेचैनी बनी रहतीं।

घ- देखा है कि जिस मुट्ठी में तुम कितना कुछ एक साथ भर लेना चाहतीं थी, उसमें जो था वह भी धीरे-धीरे बाहर फिसलता रह गया -कि तुम्हारे मन में लगातार एक डर समाता गया है जिसके मारे कभी तुम घर का दामन थामती हो, कभी बाहर का- औश्र कि वह डर एक दशहत में बदल गया, जिस दिन तुम्हें एक बहुत बड़ा झटका खाना पड़ा..... आखिरी कोशिश में।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

ड.- नहीं कर पाया। उस दासता ने मुझे सुरक्षा दी। झूठी प्रतिष्ठा दी। सुविधाओं ने मेरी धार भोंथरी कर दी। मेरे भीतर के उस आदमी को जगाया , जो बदला लेता है, जो अपने अेहकार को संसार से बड़ा मानता है। द्रुपद से बदला लेने के लिए मैने अपने विद्याार्थियों को युद्ध का उन्माद दिया। उनका उपयोग अपने स्वार्थ के लिए किया, कृपी ! मै हर दिन छोटा आदमी होता गया।

च- और उस राजकीय अन्न की दासता ने मेरा विवेक खरीदा। मेरी न्याय बुद्धि खरीदी। मुझे एकलव्य का अंगूठा कटाना पड़ा, मुझे कर्ण जैसे होनहार विद्यार्थी को व्यवस्था की आड लेकर ठुकराना पड़ा । पक्षपात, क्षुद्रता नें मेरा स्वत्व छीन लिया। अश्वत्थामा, उस समझौता ने मुझे कभी सही आदमी नही बनने दिया।

छ- हाँ, जो सत्य है न वह बुद्धि और तर्क से बड़ा है। भगौती मरा नहीं। जैसे सूका भी नही मरी। भगौती अब भी अपने सूने घर-आंगन को निहारता है और दरवज्जे पर वहीं बैठा-बैठा अपनी आँखों में देखता है-मानों सूका आयी है और उसी खमिया को पकडकर हँस रही है।

ट- कैसे क्षुद्र विचार मेरे मन में उठने लगे है। क्या मै पथभ्रष्ट हो रहा हूं? अपना दायित्व भूल रहा हूं? मेरे गुरू ने मुझे एक परीक्षा में डाला, परिस्थितियाँ मुझे दूसरी परीक्षा में डाल रही है। माधवी के मन में क्या है, वह क्या सोचती है कौन जाने? .... यदि मुझे आठ सौ घोडे? मिल भी गये तो मै अपनी प्रतिज्ञा पूरी भले ही कर लूं माधवी को खो बैठूंगा।

2. चंद्रगुप्त नाटक का नायक आप किसे मानते है, तर्कपुर्ण उत्तर लिखिए। **15**

अथवा

चंद्रगुप्त नाटक के स्त्री पात्राों के चरित्र का विवेचन कीजिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

3. सावित्री का चरित्र चित्रण कीजिए। 15

अथवा

'आधे-अधुरे नाम की इस नाटक के संदर्भ में व्याख्या कीजिए।

4. ''अंधा कुआा नाटक ग्रामीण जीवन का यथार्थ नही वास्तव रंगमंच है।'' डॉ. लाल के इस कथन की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

सूका का चरित्र लिखिए।

5. अरविन्द को 'एक और द्रोणाचार्य' क्यों कहा गया है? अरविन्द के अंतर्द्वन्द्व को स्श्प्ट कीजिए। 15

अथवा

माधवी अथवा गालव का चरित्र लिखिए।

अथवा

नाटकीय तत्वों की दृष्टि से 'माधव' की समीक्षा कीजिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com